satvikly

दीवाली पूजा मंत्र और आरती

DIWALI PUJA MANTRAS & AARTI

लक्ष्मी-गणेश के पाठ, हिंदी अर्थ और पढ़ने का क्रम



जिस पाठ की जरूरत हो, उसका पृष्ठ खोलें

गणेश मंत्र और वंदना 2

लक्ष्मी नमस्कार और स्तुति 3

अर्पण पाठ और पुष्पांजलि 4

गणेश जी की पूरी आरती 5

लक्ष्मी माता की पूरी आरती 6

आरतियों का हिंदी भावार्थ 7

क्षमा-प्रार्थना और समापन 8

पूजा की पूरी विधि पढ़ें

पूजन और भोग के बाद पुष्पांजलि दें। फिर गणेश आरती, लक्ष्मी आरती और क्षमा-प्रार्थना करें। परिवार का क्रम अलग हो तो वही अपनाएँ।

मंत्र और आरती ऑनलाइन पढ़ें

गणेश जी का मंत्र और वंदना

गणेश पूजन में नमस्कार करें। वंदना पढ़नी हो तो नीचे दिया श्लोक पढ़ें।



कब पढ़ें?

पूजा की शुरुआत में गणेश जी के सामने हाथ जोड़ें। उनका स्मरण करके नमस्कार मंत्र पढ़ें।

गणेश पूजन में फूल, धूप, दीप और भोग देते समय पृष्ठ 4 की संबंधित पंक्ति पढ़ सकते हैं।

गणेश नमस्कार मंत्र

ॐ गं गणपतये नमः।

अर्थ: गणपति जी को प्रणाम है। गं इस मंत्र का बीजाक्षर है।

वक्रतुण्ड महाकाय श्लोक

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

हिंदी अर्थ: हे गणेश जी, आपकी सूँड मुड़ी हुई है और शरीर विशाल है। आपका तेज करोड़ सूर्यों जैसा है। मेरे सभी कार्य सदा बिना बाधा पूरे करें।

वक्रतुण्ड: मुड़ी हुई सूँड वाले। **निर्विघ्नं:** बिना बाधा।
सर्वकार्येषु: सभी कार्यों में। **सर्वदा:** हर समय।

लक्ष्मी माता का नमस्कार और स्तुति

माता का ध्यान करके प्रणाम करें। स्तुति का चुना हुआ श्लोक नीचे दिया है।



कब पढ़ें?

लक्ष्मी पूजन की शुरुआत में माता का ध्यान करके नमस्कार करें। भोग के बाद स्तुति पढ़ सकते हैं।

अर्पण के पाठों में महालक्ष्म्यै भी माता लक्ष्मी के लिए आता है। इसका अर्थ है: महालक्ष्मी को।

लक्ष्मी नमस्कार मंत्र

श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः।

अर्थ: श्रीलक्ष्मी देवी को नमस्कार है।

महालक्ष्मी अष्टकम् का पहला श्लोक

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

हिंदी अर्थ: हे महामाया महालक्ष्मी, आपको प्रणाम है। आप श्रीपीठ पर विराजती हैं और देवता आपकी पूजा करते हैं। आपके हाथों में शंख, चक्र और गदा हैं।

श्रीपीठ: देवी का आसन। **सुरपूजिते:** जिनकी देवता पूजा करते हैं।
महालक्ष्मि: हे महालक्ष्मी। इस संबोधन में अंत की मात्रा छोटी है।

फूल, धूप, दीप और भोग के अर्पण पाठ

गणेश पूजन में गणेश जी की पंक्ति और लक्ष्मी पूजन में लक्ष्मी माता की पंक्ति पढ़ें।

1. फूल अर्पित करें

गणेश जी ॐ गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि।

लक्ष्मी माता ॐ महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।

अर्थ: मैं नमस्कार करके फूल अर्पित करता/करती हूँ।

2. धूप दिखाएँ

गणेश जी ॐ गणपतये नमः धूपं घ्रापयामि।

लक्ष्मी माता ॐ महालक्ष्म्यै नमः धूपं समर्पयामि।

अर्थ: धूप की सुगंध स्वीकार करने और धूप अर्पित करने का निवेदन।

3. दीप दिखाएँ

गणेश जी ॐ गणपतये नमः दीपं दर्शयामि।

लक्ष्मी माता ॐ महालक्ष्म्यै नमः दीपं समर्पयामि।

अर्थ: मैं दीप दिखाता/दिखाती हूँ और अर्पित करता/करती हूँ।

4. भोग अर्पित करें

गणेश जी ॐ गणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

लक्ष्मी माता ॐ महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

अर्थ: मैं भोजन अर्पित करता/करती हूँ। नैवेद्य यानी पूजा का भोग।

दीप अर्पण पूजन का एक चरण है। दोनों आरतियाँ पुष्पांजलि के बाद गाएँ।

भोग और उसके बाद जल अर्पण पूरा हो तो पुष्पांजलि दें

दोनों हाथों में फूल लेकर हिंदी में कहें: “हे माता लक्ष्मी, हमारे परिवार को सद्बुद्धि दें और हमारा पूजन स्वीकार करें।” फूल चरणों में या अर्पण की थाली में रखें।

अब पहले गणेश जी की आरती करें, फिर लक्ष्मी माता की।

गणेश जी की आरती

जय गणेश देवा · मुखड़ा हर अंतरे के बाद दिया है। पंक्तियाँ ऊपर से नीचे पढ़ें।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

एकदन्त दयावन्त, चार भुजाधारी।
माथे पर तिलक सोहे, मूसे की सवारी॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

अँधे को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

सूर श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

इसके बाद लक्ष्मी माता की आरती अगले पृष्ठ पर पढ़ें।

लक्ष्मी माता की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता · प्रत्येक पद के बाद दोहराई जाने वाली पंक्ति भी नीचे दी है।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु धाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जगन्माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दोनों आरतियों का हिंदी भावार्थ

भावार्थ उसी क्रम में हैं, जिस क्रम में पिछले दो पृष्ठों पर पद दिए हैं।

गणेश आरती

मुखड़ा: माता-पिता का स्मरण

गणेश जी की जय बोलते हुए माता पार्वती और पिता महादेव को याद किया गया है। जाकी का अर्थ जिनकी है।

1. गणेश जी का स्वरूप

एकदन्त यानी एक दाँत वाले। दयावन्त यानी दयालु। चार हाथ, तिलक और मूषक वाहन का वर्णन है। मूसे का अर्थ मूषक है।

2. भोग और सेवा

पान, फूल, मेवा और लड्डू चढ़ाकर सेवा करने का भाव है। लड्डुअन शब्द लड्डुओं के लिए आया है।

3. कृपा का भक्ति-वर्णन

पद में दृष्टि, स्वास्थ्य, संतान और धन मिलने को गणेश जी की कृपा के रूप में गाया गया है। काया यानी शरीर; यहाँ माया का अर्थ धन है।

4. शरण और प्रार्थना

भक्त गणेश जी की शरण लेकर पूजा और सेवा स्वीकार करने की प्रार्थना करता है।

लक्ष्मी आरती

1. माता की आराधना

निशिदिन यानी रात-दिन। सेवत यानी आराधना करना। इस पाठ में हर शिव का और धाता ब्रह्मा का नाम है।

2. जगन्माता के रूप

उमा, रमा और ब्रह्माणी देवी के रूप हैं। सूर्य, चन्द्रमा और नारद उनकी स्तुति करते हैं।

3. दुर्गा रूप की स्तुति

निरंजनी यानी निर्मल। पद में माता की कृपा से सुख, धन और सफलता मिलने का भाव है।

4. संसार-सागर से पार

देवी शुभ देने वाली और संसार से पार उतारने वाली हैं। भवनिधि यानी संसार-सागर; त्राता यानी पार उतारने वाली।

5. घर में अच्छे गुण

माता के निवास से घर में सद्गुण आने और मन का डर दूर होने की भावना है।

6. भोजन और वस्त्र

भोजन, वस्त्र और यज्ञ के साधनों के लिए माता के प्रति आभार प्रकट किया गया है।

7. क्षीरसागर से प्रकट माता

क्षीरोदधि यानी क्षीरसागर। चतुर्दश यानी चौदह। पद में समुद्र मंथन के रत्नों का स्मरण है।

8. आरती का आनंद

उर यानी हृदय। अंतिम पद में हृदय के आनंद और पाप से मुक्ति की भक्ति भावना है।

दोनों आरतियों के बाद क्षमा-प्रार्थना और प्रणाम के लिए अगला पृष्ठ खोलें।

क्षमा-प्रार्थना और पूजा का समापन

दोनों आरतियाँ पूरी होने पर दीपक की थाली सुरक्षित आधार पर रख दें।



हाथ जोड़कर प्रार्थना करें

नीचे दिए संस्कृत श्लोक देवी को संबोधित हैं। परमेश्वरि, सुरेश्वरि और देवि शब्द माता के लिए आए हैं।

गणेश जी और लक्ष्मी माता, दोनों से प्रार्थना के लिए नीचे का हिंदी पाठ पढ़ सकते हैं।

देवी से क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

हिंदी अर्थ: हे देवी, मैं आवाहन, विदाई और पूजा की विधि पूरी तरह नहीं जानता/जानती। मेरी भूलें क्षमा करें। मंत्र, क्रिया या भक्ति में रही कमी पूरी करके मेरा पूजन स्वीकार करें।

यहाँ विसर्जन पूजा के अंत में विदाई का निवेदन है। यह मूर्ति को पानी में डालने का निर्देश नहीं है। घर के मंदिर की मूर्ति अपने स्थान पर रहने दें।

गणेश जी और लक्ष्मी माता से हिंदी प्रार्थना

“हे गणेश जी और माता लक्ष्मी, हमारा पूजन स्वीकार करें। पूजा में हुई भूल क्षमा करें। हमारे परिवार को सद्बुद्धि और सुख-शांति दें।”

परिवार के सदस्य प्रणाम करें। फिर प्रसाद बाँटें। जलता दीपक या धूप बिना निगरानी न छोड़ें।

satvikly

॥ शुभं भवतु ॥

DIWALIPUJAKIT

पूजा किट ऑर्डर करें

लक्ष्मी-गणेश पूजा के लिए Satvikly Diwali Puja Kit देखें।
Basic में 31 और Complete में 40 प्रकार की सामग्री है।
फूल, फल, मूर्ति और पूजा के बर्तन अलग से लें।

QR स्कैन करें · SCAN TO ORDER

satvikly.com/product/diwali-puja-kit/

WHATSAPP/PHONE

+91 931 178 0821